Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 1894–1899

शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों के संकाय और छात्रों द्वारा शैक्षिक संसाधनों के उपयोग और बाधाओं के लिए प्रेरकों का अध्ययन

मुरारी कुमार [1], डॉ धर्मेंद्र सिंह [2]

[1]शोधकर्ता, शिक्षा शास्त्र, मंगलायतन विश्वविद्यालय बेसवां (अलीगढ़) उत्तर–प्रदेश
[2]शोध निर्देशक, शिक्षा शास्त्र, मंगलायतन विश्वविद्यालय बेसवां (अलीगढ़) उत्तर–प्रदेश

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.3094

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति का आधार होती है। राज्य की अमूल्य निधि वहाँ के सुयोग्य नागरिक होते है। किसी भी राष्ट्र का विकास, उन्नति एवं समृद्धि तभी होता है, जब वहां के नागरिक सुशिक्षित हो। वास्तव में शिक्षा एक ओर जहाँ व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहयोग देती है तथा सर्वांगीण विकास करके व्यक्तिगत उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है, वहीं दूसरी ओर वह उसे समाज का एक महत्त्वपूर्ण एवं उत्तरदायी सदस्य तथा राष्ट्र का एक सुयोग्य, कर्त्तव्यनिष्ठ व सजग नागरिक बनाती है, शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति का आधार होती है। राज्य की अमूल्य निधि वहाँ के सुयोग्य नागरिक होते है। किसी भी राष्ट्र का विकास, उन्नति एवं समृद्धि तभी होता है, जब वहां के नागरिक सुशिक्षित हो। वास्तव में शिक्षा एक ओर जहाँ व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहयोग देती है तथा सर्वांगीण विकास करके व्यक्तिगत उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है, वहीं दूसरी ओर वह उसे समाज का एक महत्त्वपूर्ण एवं उत्तरदायी सदस्य तथा राष्ट्र का एक सुयोग्य, कर्त्तव्यनिष्ठ व सजग नागरिक बनाती है, शिक्षा हमारे समाज का एक गतिशील पहलू है। शिक्षा समाज पर और समाज शिक्षा पर अपना–अपना प्रभाव डालते है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी पीढ़ी के उच्च आदर्शों, अभीष्ट आशाओं, सनातन मूल्यों, सतत विश्वासों एवं प्राचीन परम्पराओं से युक्त अपनी सांस्कृतिक धरोहर को हस्तान्तरित करता है। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक माध्यम माना गया है और इसी धारणा को ध्यान में रखकर प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक इसकी उपादेयता पर जोर दिया जाता है।

Keywords: सर्वांगीण विकास, शिक्षा, समाज, उन्नति, राष्ट्र

1. परिचय

उच्च शिक्षण उपलब्धि के लिए योगदानकर्ता के रूप में अच्छे शिक्षक.छात्र संबंधों के महत्व को प्रदर्शित करने वाला अनुसंधान मजबूत है लेकिन छात्रों के साथ अच्छे संबंध विकसित करने के लिए शिक्षक क्या कर सकते हैं यह कम वेल्डेड है। यह अध्ययन एक नए चिंतनशील अभ्यास उपकरण के अनुप्रयोग के माध्यम से छह शिक्षकों के संबंधपरक रणनीतियों की खोज करके इस शोध अंतराल को भरने में योगदान देता है। शिक्षकों ने छह महीने की अवधि में तीन साक्षात्कारों की एक श्रृंखला में छात्रों के एक समूह के साथ अपने संबंधों की गुणवत्ता की जांच करने के लिए उपकरण का उपयोग किया। निष्कर्षों को छह मामलों के अध्ययन और एक क्रॉस.केस विश्लेषण में प्रस्तुत किया गया है जो मौजूदा शोध के मद्देनजर शिक्षकों की संबंधपरक रणनीतियों पर चर्चा करता है। अच्छे शिक्षक.छात्र संबंधों को विकसित करने की मुख्य रणनीति छात्रों को अकादमिक प्रदर्शन रुचियों और उनकी व्यक्तिगत समस्याओं के संदर्भ में जानना था न केवल कक्षा में बल्कि स्कूल के हॉलवे और स्कूल के बाहर भी छात्रों ने बातचीत में आकर्षक ज्ञान के माध्यम से यह ज्ञान प्राप्त किया। परिणामों से पता चलता है कि शिक्षकों ने मुख्य रूप से उन छात्रों के साथ अच्छे संबंध बनाए जिन्होंने उनके साथ संपर्क शुरू किया। नतीजतन यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने सभी छात्रों के साथ कक्षा में संबंधित असमानता को रोकने के लिए संपर्क करने की अपनी जिम्मेदारी के बारे में जानते हों। यह अध्ययन बताता है कि आईओएस मानचित्र जैसे सरल चिंतनशील अभ्यास में संलग्न होने से शिक्षकों को उन छात्रों की पहचान करने में मदद मिल सकती है जिनके साथ उन्हें अधिक बातचीत करने की आवश्यकता होती है। इस अध्ययन में शिक्षकों ने करीबी शिक्षक.छात्र संबंधों में 17 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की जिसका श्रेय उन्होंने आंशिक रूप से मानचित्र के उपयोग को दिया जिससे वे छात्रों के साथ अपने संबंधों के बारे में

अधिक जागरूक हुए। केस स्टडीज और मानचित्र ऐसे उपकरण हैं जिनका उपयोग स्कूलों में संबंधपरक रणनीतियों और व्यवहार प्रबंधन पर चर्चा करने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में किया जा सकता है।

यह अध्ययन विश्व स्तर पर छात्रों के बीच कम सीखने की उपलब्धि की समस्या से संबंधित है। विकसित देशों के आंकड़े बताते हैं कि 15 वर्षीय बच्चों का 19 प्रतिशतए पांच छात्रों में से एक बुनियादी साक्षरता कौशल यओईसीडीए 2012 प्राप्त नहीं करता है। तुलनात्मक रूप से कई विकासशील देशों में आधे से कम छात्र पढ़ सकते हैं जब वे स्कूल छोड़ते हैं (यूनेस्कोए 2014) मैंने अपने कैरियर के दौरान विकसित देशों और विकासशील संदर्भों में कम सीखने की उपलब्धि का सामना किया है। उदाहरण के लिए नॉर्वे में शरणार्थी बच्चों के लिए एक पूर्व द्वितीय भाषा शिक्षक के रूप में मैंने छात्रों को उनकी शिक्षा में बड़े अंतराल के साथ पढ़ाया। बाद में जाम्बिया में संयुक्त राष्ट्र के लिए एक शिक्षा पेशेवर के रूप मेंए 74 प्रतिशत छात्र 5 ग्रेड तक पहुंच गए केवल 35 प्रतिशत ही पढ़ने में सक्षम थे यशिक्षा मंत्रालयए जाम्बियाए 2005। शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों के सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किए गए हस्तक्षेपों का एक समूह है। अनुसंधान इंगित करता है कि इनमें से शिक्षक.छात्र संबंधों की गुणवत्ता सीखने की उपलब्धि यहेटी 2009 पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक है। उदाहरण के लिए कई अध्ययन करीबी शिक्षक.छात्र संबंधों और साक्षरता के बीच एक सकारात्मक लिंक दिखाते हैं जैसे कि वर्णमाला पत्र नाम सीखना यजैसे वेब 2008 व्याकरण लाभ जैसे श्मिट एट अल। 2012 लेखन गुणवत्ता उदाहरण के लिए व्हाइट 2013 और पढ़ने के प्रदर्शन जैसे 2012। कुल मिलाकर शिक्षक.छात्र संबंधों की गुणवत्ता सीखने के लिए छात्रों की प्रेरणा से जुड़ी है रूर्दा एट अल। 2011। अच्छे शिक्षक.छात्र संबंध छात्र भागीदारी के उच्च स्तर से जुड़े होते हैं साथ ही विघटनकारी व्यवहार अनुपस्थिति और ड्रॉपआउट को कम करते हैं कॉर्नेलियस.व्हाइटए 2007 शिक्षक और छात्र के बीच एक नकारात्मक संबंध जिसे पुराने संघर्ष द्वारा चिह्नित किया गया है दूसरी ओर अंडरकेवमेंट (यस्पिल्ड 2012) से जुड़ा हुआ है।

पिछले 20-30 वर्षों (ह्यूजेस 2012 न्यूबेरी और डेविस 2008 ओर्डा 2011) के दौरान बड़ी संख्या में अध्ययन के साथ छात्र परिणामों के लिए अच्छे शिक्षक.छात्र संबंधों के महत्व पर अनुभवजन्य साक्ष्य मजबूत है। ह्यूजेस 2012 इस प्रभावशीलता अनुसंधान को शिक्षक.छात्र संबंधों पर शोध की पहली पीढ़ी के रूप में संदर्भित करता है। क्षेत्र में अनुसंधान की दूसरी पीढ़ी वर्तमान में खुद को यह समझने में चिंतित करती है कि शिक्षक.छात्र संबंध कैसे अच्छे बनते हैं और संबंधपरक हस्तक्षेप ह्यूजेसए 2012 का मूल्यांकन करते हैं। शिक्षक.छात्र संबंधों के क्षेत्र में भविष्य के अनुसंधान के बारे में अन्य शोधकर्ताओं की सिफारिशों के आधार पर मैंने तीन वर्तमान शोध अंतरालों की पहचान की। सबसे पहले शिक्षकों और शिक्षकों को शिक्षकों के साथ खराब संबंधों को विकसित करने के जोखिम वाले छात्रों की विशेषताओं के बारे में अधिक जानने की जरूरत है इसलिए वे इसे सक्रिय रूप से होने से रोक सकते हैं रुदासिल एट अल 2013 रुदास और रिमक्कुफमैन 2009। इसी तरहए शिक्षकों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि उनकी अपनी विशेषताएँ उनके शिक्षक.छात्र संबंधों (एलवाईई एट अल 2010) रुडसिल एट अल।ए 2006 की गुणवत्ता को कैसे प्रभावित करती हैं।

यह अध्याय शिक्षक.छात्र संबंधों के बारे में मौजूदा शोध की खोज करता है जो शिक्षक संबंधपरक रणनीतियों के अध्ययन के लिए एक आधार प्रदान करता है। सबसे पहले मैं छात्र परिणामों के लिए अच्छे शिक्षक.छात्र संबंधों के महत्व पर शोध दस्तावेज पर विचार करता हूं। यह शोध बताता है कि अच्छे शिक्षक.छात्र संबंध सीखने के लिए छात्रों की प्रेरणा बढ़ाते हैं जिससे उपलब्धि के स्तर में वृद्धि होती है। इसलिए शिक्षकों के साथ अच्छे रिश्ते स्कूल की विफलता के जोखिम वाले छात्रों के लिए एक सुरक्षात्मक कारक हो सकते हैं। इसके अलावा मैं शिक्षक.छात्र संबंध गुणवत्ता का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा पर विचार करता हूं और समझाता हूं कि मैं एक अच्छे शिक्षक.छात्र संबंध को कैसे परिभाषित करता हूं। मैं शिक्षक संबंधों पर शोध पर विचार करता हूं जो इस बात की पड़ताल करता है कि छात्र और शिक्षक की विशेषताएं संबंधों को कैसे प्रभावित करती हैं। अंत में मैं साहित्य की समीक्षा करता हूं जिसमें शिक्षक संबंधपरक रणनीतियों का वर्णन शामिल है। इस अध्याय में 350 से अधिक स्रोतों की समीक्षा के आधार पर प्रस्तुत साहित्य ने मेरी कार्यप्रणाली और डेटा विश्लेषण का मार्गदर्शन करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान की। मैंने शिक्षक.छात्र संबंधों और संबंधित अवधारणाओं के विषय पर साहित्य की पहचान इंटरनेट और यूसीएल के सुलभ डेटाबेस जैसे टेलर एंड फ्रांसिसए एल्सेविएर्सए और एसएजीई के माध्यम से की। पहले खोजे गए अध्ययनों से संदर्भ सूचियों के आधार पर बाद की खोजों का आयोजन किया गया। केवल अंग्रेजी में प्रकाशनों की समीक्षा की गई।

2. शिक्षक–छात्र संबंधों का महत्व

शिक्षक.छात्र संबंधों पर शोध की पहली पीढ़ी में छात्र परिणामों यह्यूजेस 2012 पर रिश्ते की गुणवत्ता के प्रभावों को मापने वाले कई मात्रात्मक अध्ययन शामिल हैं। इस प्रभावशीलता के शोध की मात्रा को कॉर्नेलियस.व्हाइट 2007 और रोओर्डा कोमेन स्पिल्ड और ऊर्ट 2011 द्वारा मेटा.विश्लेषणों में चित्रित किया गया है। दोनों समीक्षाओं में अधिकांश अध्ययन संयुक्त राज्य अमेरिका में किए गए थे। कॉर्नेलियस.व्हाइट 2007 में 1948 से 2004 तक 119 अध्ययन शामिल हैं जिसमें 355ए325 छात्र और ब्राजील कनाड जर्मन यूके और यूएसए में 14ए851 शिक्षक शामिल हैं। 1990 से 2011 तक 99 अध्ययनों को संश्लेषित करती है जिसमें अफ्रीका एशिया ऑस्ट्रेलिया कनाडा यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में 129ए423 छात्र शामिल हैं। दोनों समीक्षाएं अच्छे शिक्षक.छात्र संबंधों और छात्र की व्यस्तता और उपलब्धि के बीच एक मजबूत जुड़ाव का संकेत देती हैं।

3. शिक्षक –छात्र संबंध गुणवत्ता की उपलब्धि

व्यापक शैक्षिक प्रभावशीलता अनुसंधान के संदर्भ में शिक्षक.छात्र संबंधों पर इस संश्लेषित अनुसंधान को देखना उपयोगी है। हेटी 2009 ने शिक्षा में काम करने वाले 800 से अधिक मेटा.एनालिसिस के व्यापक संश्लेषण जिसमें 52ए637 मात्रात्मक अध्ययनों में 236 मिलियन छात्रों की गिनती शामिल है शिक्षा में अन्य कारकों की तुलना में सीखने पर शिक्षक.छात्र संबंधों के प्रभाव को निर्धारित करता है। इस शोध का अधिकांश हिस्सा विकसित देशों में आयोजित किया गया था मुख्यतः संयुक्त राज्य अमेरिका यहैटी 2009 में। हट्टी 2009 ने निष्कर्ष निकाला है कि 95 प्रतिशत शिक्षा हस्तक्षेपों का उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह सवाल नहीं है कि शिक्षा में क्या काम करता है क्योंकि ज्यादातर पहल करते हैं लेकिन क्या हस्तक्षेप का सीखने पर औसत प्रभाव से अधिक है। छात्र घर स्कूल शिक्षक पाठ्यक्रम और शिक्षण दृष्टिकोणों की श्रेणियों में कारकों के बीच प्रभाव का आकार बदलना हाटी 2009 दर्शाता है कि शिक्षकों से संबंधित कारकों का सीखने की उपलब्धि पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है।

शिक्षक.छात्र संबंध गुणवत्ता के महत्व के संदर्भ मेंए हाटी की 2009 चर्चा कॉर्नेलियस.व्हाइट 2007 के मेटा.विश्लेषण पर आधारित है। कॉर्नेलियस.व्हाइट 2007 ने पाया कि शिक्षार्थी.केंद्रित शिक्षाए जो शिक्षक.छात्र संबंधों की भूमिका पर जोर देती है का शिक्षण उपलब्धि के साथ महत्वपूर्ण जुड़ाव है साथ ही विघटनकारी व्यवहार अनुपस्थिति और ड्रॉपआउट को कम करना है। रूर्डा एट अल 2011 अच्छे शिक्षक.छात्र संबंधों और छात्र शैक्षिक संतुष्टि और उपलब्धि के बीच इस मजबूत जुड़ाव की पुनरू पुष्टि करता है। हैटी 2009 का निष्कर्ष है कि कॉर्नेलियस.व्हाइट के मेटा.विश्लेषण से पता चलता है कि कक्षाओं में छात्रों के साथ अच्छे संबंध विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने वाले शिक्षकों के साथ अधिक व्यस्तता स्वयं का और दूसरों का सम्मान कम प्रतिरोधी व्यवहार अधिक छात्र.शुरुआत वाली गतिविधियाँ और उच्च शिक्षण परिणाम।

फिर भी अध्ययन के संयोजन और तुलना के लिए एक विधि के रूप में मेटा.विश्लेषण की आलोचना की जाती है जो एक दूसरे से भिन्न होते हैं यह समे सेब और संतरे हटी 2009 की तुलना करने जैसा है। मेटा.एनालिसिस एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा है जो ुनंदज एक एकल मात्रात्मक अनुमान में कई अध्ययनों के परिणामों को संश्लेषित करने के लिए एक विशिष्ट सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग करता है श्यपेटीट्रिक और रॉबर्ट्सए 2006 पृष्ठ 19। हालांकि हटी 2009 इस तर्क को खारिज करता है कि आप दो अध्ययनों की तुलना नहीं कर सकते हैं जो वास्तव में समान नहीं हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि कोई भी दो अध्ययन कभी भी समान नहीं होंगे इसके बजाय पे केवल ब्याज का सवाल है कि वे उन कारकों यपी। 10 में कैसे भिन्न होते हैं जिनकी संबंधित संश्लेषण में जांच की जा रही है। इसी तरहए पेटीट्री और रॉबर्ट्स 2006 ने एकल श्श् यपृष्ठ 15 के सर्वेक्षण के लिए एक व्यवस्थित समीक्षा की तुलना कीए जिसमें एक एकल अध्ययन एक सर्वेक्षण प्रतिवादी के बराबर है। हालाँकि उत्तरदाता अलग हैं एक शोध प्रश्न का उत्तर सभी उत्तरदाताओं के डेटा के बजाय एक प्रतिवादी यपेटीर्च्यु और रॉबर्ट्सए 2006 के उत्तर से बेहतर है। इस प्रकारए कॉर्नेलियस.व्हाइट 2007 हैटी 2009 और रुर्डा एट अल 2011 द्वारा मेटा.विश्लेषण के निष्कर्ष छात्रों की सफलता के लिए शिक्षक.छात्र संबंधों की गुणवत्ता के महत्व के मजबूत समग्र प्रमाण प्रदान करते हैं भले ही निष्कर्ष अलग.अलग अध्ययनों में भिन्न होते हैं।

4. गुणवत्ता का प्रभाव

कॉर्नेलियस.व्हाइट 2007 और रुर्डा एट अल 2011 प्रदर्शित करते हैं कि सीखने की उपलब्धि से जुड़े होने के अलावा शिक्षक.छात्र संबंधों की गुणवत्ता छात्रों के सीखने की प्रेरणा से दृढ़ता से संबंधित है। इसी तरह छात्र विशेषताओं पर 19 अध्ययनों का एक और हालिया मेटा.विश्लेषण यनुरमी 2012 में पाया गया कि शिक्षकों ने लगातार व्यस्त छात्रों के साथ संबंधों में अधिक घनिष्ठता की सूचना दी। शिक्षक.छात्र संबंध गुणवत्ता का संबंध सीखने की उपलब्धि यकॉर्नेलियसव्हाइट 2007 रोआटा एट अल 2011 की तुलना में छात्र जुड़ाव के साथ अधिक मजबूत है। दूसरे शब्दों में अच्छे शिक्षक.छात्र संबंधों और उपलब्धि के बीच की कड़ी छात्रों की प्रेरणा यमार्टिन एंड डाउसन 2009 रुर्डा एट अल। 2011 की भावनाओं की मध्यस्थता है। प्रेरक अनुसंधान में अच्छे शिक्षक.छात्र संबंधों के महत्व को आत्म.निर्धारण सिद्धांत द्वारा समझाया गया है जो तर्क देता है कि सभी व्यक्तियों की तीन बुनियादी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं हैं संबंधित स्वायत्तता और सक्षमता यडेसी और रयान 2000 की आवश्यकता। संबंधित या संबंधित की आवश्यकता एक इंसान की प्रवृत्ति को संदर्भित करती हैए जो दूसरों से जुड़ा हुआ महसूस करने की इच्छा रखता है प्यार और देखभाल करने के लिए श्यडेसी और रयान 2000 पृष्ठ 231। ओस्टरमैन 2000 नोट की अवधारणा व्यापक है और इसे समुदाय समर्थन या स्वीकृति की भावना के रूप में भी जाना जाता है। डेसी और रयान 2000 सामाजिक जीवों की एक गहरी डिजाइन विशेषता के रूप में संबंधित की आवश्यकता को दर्शाते हैं श्यपी। 253। इसी तरहए बैमिस्टर और लेरी 1995 का तर्क है कि संबंधित की आवश्यकता इतनी मजबूत है कि व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी रिश्ते विकसित करना चाहते हैं। जरूरत है अपने आप में एक शक्तिशाली प्रेरणा (बॉमिस्टर और लेरीए 1995) नतीजतन जो छात्र अपने शिक्षक के साथ जुड़े और समर्थित महसूस करते हैं वे सीखने के लिए प्रेरित महसूस करते हैं यरयान और पैट्रिक 2001।

सकारात्मक शिक्षक.छात्र संबंध छात्रों की आंतरिक प्रेरणा यडेसी और रयान 2000 ओईसीडी 2013 के साथ जुड़े हुए हैं सीखने में एक वास्तविक रुचि बाहरी प्रेरणा के विपरीत जो दूसरों से दबाव या पुरस्कार की इच्छा से प्रेरित है (डेसी और रयान 2000 फ्रेडरिक्सए ब्लुमेनफेल्डए और पेरिस 2004) में स्कूल शैक्षिक संतुष्टि के तीन प्रकारों का वर्णनय भावनात्मक व्यवहारिक और संज्ञानात्मक जुड़ाव यह समझने के लिए उपयोगी है कि अच्छे संबंध आंतरिक प्रेरणा को क्यों बढ़ावा देते हैं। भावनात्मक जुड़ाव छात्रों की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं जैसे कि ब्याज या बोरियत यफ्रेडरिक एट अल 2004 को संदर्भित करता है। शिक्षक की गर्मजोशी और ध्यान स्कूल को पसंद करने वाले छात्रों और योगदान की भावना को महसूस कर सकता है। इस तरह की सकारात्मक भावनाएं छात्र प्रेरणा (यस्किनर 2008) को प्रेरित करती हैंए और इसलिए यह व्यवहारिक जुड़ाव पैदा कर सकती हैए जो तब है जब छात्र नियमों का पालन करते हुए और शिक्षण गतिविधियों में भाग लेते हैं (यफ्रेडरिक्स 2004)

5. साहित्य की समीक्षा

बेरापण्डा (2012) ने 'टीचर इम्पावरमेन्ट स्ट्रेटजीज टू इन्श्योर कम्यूनिटी इन्वाल्बमेंट' का अध्ययन किया। इस अध्ययन के परिणामस्वरूप उन्होंने पाया कि सामुदायिक सहभागिता के कारण छात्रों के नामांकन में वांछित वृद्धि हुई जो 1991 में 36 प्रतिशत से बढ़कर 1996 में नामांकन में वृद्धि 100 प्रतिशत और स्कूल में बच्चों का ठहराव जो 1991 में 14 प्रतिशत था। वह 1996 में 93 प्रतिशत हो गया। शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करते हुए उन्होंने पाया कि एक प्रभावी शिक्षक पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने वाला, एक सामुदायिक संगठनकर्त्ता अधिगम को सहज बनाने वाला, मूल्यांकनकर्त्ता, निधि का उपयोग करने वाला, शिक्षण अधिगम सामग्री में नवीनता लाने वाला और स्वस्थ निर्देशक और सलाहकार होता है। प्रभावी शिक्षण युक्तियों के सम्बन्ध में कहा कि उसमें ग्रामीण वातावरण का समावेश, पाठ्यक्रम योजना, आनन्दमय तरीके से सीखना, कहानी के माध्यम से पढ़ाने की कला, रेखाचित्र, लेखाचित्र, निर्देशन, और सस्ते शिक्षण सामग्री का विकास होना चाहिए।

अग्रवाल (2015) ने 'ऑल इण्डिया एजुकेशनल सर्वे कन्डेक्टेड बाई एन0सी0ई0आर0टी0' के अध्ययन में प्राथमिक विद्यालयों में भवन, पीने का पानी, शौचालय, चाहरदीवारी, चाकबोर्ड और अन्य शिक्षण सामग्रियों की भारी कमी पायी गयी। आपरेशन ब्लैक बोर्ड और जवाहर रोजगार स्कीम के द्वारा स्कूलों में अतिरिक्त कक्षाओं तथा अन्य सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए प्रयास किया गया था। लेकिन स्कूलों में सुविधाओं की कमी और गुणवत्ता की कमी पहले की तरह ही बनी रही। स्कूलों में अतिरिक्त कक्षाओं की सुविधा न होने के कारण नामांकन को बढ़ाने के प्रयास से न्याय नहीं हो पा रहा था। अपनी रिपोर्ट में कहते है कि स्कूलों की सुविधाओं में स्कूल भवन पहला महत्वपूर्ण संसाधन, दूसरा शिक्षक और तीसरा शिक्षण सामग्री है। स्कूलों में

सुविधाओं की कमी से स्कूल की गुणवत्ता को बढ़ाना असम्भव है। इसके लिए समुदाय, स्कूल प्रबन्धन आगे आकर प्रयास कर सकता है। इनके प्रयास के बिना स्कूलों में संसाधनों की कमी को दूर नहीं किया जा सकता है।

राव (2011) ने 'द रिलेशनशिप बिटविन कम्यूनिटी पार्टीशिपेशन एण्ड स्कूल इफेक्टिवनेश' पर एक सार्थक अध्ययन किया। इन्होंने सामुदायिक सहभागिता और विद्यालय की प्रभावकारिता में धनात्मक सम्बन्ध बताया। अध्ययन में सामुदायिक सहभागिता के कई पक्षों की पहचान की गयी। जैसे– विद्यालय की संरचना का विकास, विद्यालयी कार्यक्रम, विद्यालयी उत्सव, विद्यालयी योजना, विद्यालयी प्रशासन और देखभाल। सामुदायिक सहभागिता के कारण अनुशासन, विद्यार्थियों की उपलब्धि, शिक्षकों द्वारा बच्चों का प्रोत्साहन, विद्यालय में निर्देशन, आन्तरिक– व्यक्तिगत सम्बन्ध, विद्यालयी पाठ्यसहगामी क्रियाओ में प्रतिभागिता और अतिरिक्त पाठ्यसहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता आदि प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में यह अवलोकन किया गया कि जहाँ पर सामुदायिक सहभागिता की दर अधिक है। उन विद्यालयों में छात्रों के नामांकन की दर अधिक है।

आर0सी0शर्मा (2011) ने 'इफेक्टिव मैनेजमेंट फैक्टर ऑफ प्राइमरी स्कूल' का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षक और विद्यालय समिति का सम्बन्ध स्कूल के विकासशील गतिविधियों के सम्बन्ध में काफी कम था। अभिभावकों और शिक्षकों का सम्बन्ध बच्चों के नामांकन, ठहराव, शिक्षा की गुणवत्ता, संसाधन और उनके उपयोग में सम्बन्ध औसत था। विद्यालय समिति और अभिभावक संघ में समुदाय की प्रतिभागिता औसत थी। ग्राम शिक्षा समिति और अभिभावक शिक्षक संघ की बैठक नियमित नहीं होती थी। विद्यालय के प्रभावी संचालन और आन्तरिक दक्षता को सुदृण करने के लिए संस्थागत नियोजन और प्रबन्धन की आवश्यकता है।

बनर्जी रूक्मिनी (2010) ने क्षेत्र अध्ययन द्वारा मुम्बई और दिल्ली में ''गरीबी और प्राथमिक शिक्षा'' पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा को प्राप्त करने में जो बाधाएं आती है, उनका विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में यह बताया गया कि अधिक बच्चें विद्यालय इसलिए नहीं आ पाते हैं क्योंकि उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है। साथ ही स्कूल व्यवस्था की कमियाँ भी बच्चों के स्कूल न आने का कारण थी। बच्चों को आकर्षित करने तथा उनको स्कूल में बनाएं रखने के लिए स्कूल में संसाधनों की अपर्याप्तता, घरेलू आर्थिक समस्याओं की तुलना में अधिक निर्णायक थी। सरकारी स्कूल व्यवस्था की क्षमता बच्चों को शिक्षित करने और उनकों बनाएं रखने के लिए बहुत प्रभावकारी नहीं है। अध्ययन यह भी बताता है कि कक्षा 3 और कक्षा 4 में पढ़ने वाले बच्चें का शैक्षिक उपलब्धि स्तर बराबर है। यह भी पाया गया कि जो बच्चों वर्षों से स्कूल जा रहे हैं, वे भी स्थाई रूप से साक्षर नहीं है। यह अध्ययन एक लोचशील दृष्टिकोण को अपनाने का सुझाव देता है। सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा को प्राप्त करने के लिए स्थानीय समुदाय की भागीदारी को महत्व दिया गया है। तथा जो समुदाय और स्कूल अच्छा कार्य करते हैं उन्हें सार्वजनिक रूप से सम्मानित करना चाहिए।

अधिकारी तेजस्विनी (2011) ने ''गुणात्मक शिक्षा के सन्दर्भ में अध्यापक और छात्रों को प्रदान की जा रही सेवाएं तथा आवश्यकता के मध्य रिक्तता'' का अध्ययन किया। इस अध्ययन में नवी मुम्बई नगर निगम के अच्छे स्कूलों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन प्रदर्शित करता है कि विद्यालय की आधारभूत संरचना बहुत गरीब राज्य की तरह था। कक्षा–कक्ष, अध्यापक, मेज और कुर्सियों की संख्या, पर्याप्त नहीं थी। इस अध्ययन ने यह भी बताया कि एक स्कूल में 420 विद्यार्थियों के लिए 3 कक्षाकक्ष, और सिर्फ 2 अध्यापक थे। जो उन बच्चों के लिए अध्यापन का कार्य कर रहे थे। अच्छे स्थान पर विद्यालय होने के कारण और कम लागत वाली शिक्षा होने के कारण अधिकांश स्कूलों में बड़ी संख्या में बच्चे थें। इस अध्ययन में अध्यापकों के बोझ को कम करने के लिए उचित स्टॉफ की नियुक्ति के लिए सुझाव दिया गया है। शिक्षकों को शिक्षण सहायक सामग्री उपलब्ध करवायी जाय तथा बच्चों को सीखाने के लिए सृजनात्मक शिक्षण प्रणाली का प्रयोग शिक्षकों द्वारा किया जाना चाहिए। समुदाय की सहभागिता में वृद्धि की आवश्यकता है तथा जो लोग विद्यालय के विकास में क्रियात्मक रूप से सहयोग करते हैं, उनको समय–समय पर प्रशिक्षण भी प्रदान करना चाहिए।

6. अध्ययन का उद्देश्य

1. छात्रों एवं छात्राओं की विषय में शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करना।
2. छात्रों द्वारा शैक्षिक संसाधनों के उपयोग और बाधाओं के लिए प्रेरकों का अध्ययन करना।

7. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मे प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा एवं गणित विषय में शैक्षिक निष्पत्ति के मापन हेतु एन०सी०ई०आर०टी०, द्वारा विकसित कक्षा पाँच भाषा परीक्षण एवं कक्षा पाँच गणित परीक्षण का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त विज्ञान विषय में शैक्षिक निष्पत्ति के मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा विकसित विज्ञान परीक्षण का प्रयोग किया गया। इससे सम्बन्धित संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी –मूल्य का प्रयोग किया गया। इस उद्देश्य से सम्बन्धित निष्कर्षों का विवरण विषयवार अलग–अलग प्रस्तुत है।

8. विश्लेषण

छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना

प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करने के लिए सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी – मूल्य की गणना की गयी। इससे प्राप्त निष्कर्ष का विवरण तालिका – 1 में प्रस्तुत है ।

तालिका – 1 रू भागलपुर जिलें में छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी विषय के प्राप्ताकों के मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–मूल्य के मान

क्र.	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य
1.	छात्र	6.80	3.02	0.26	1.46
2.	छात्रायें	7.18	3.03		

तालिका – 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा के टी– मूल्य का मान (1. 46) सार्थक नहीं है। इसके आलोक में शून्य परिकल्पना ष्प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा की शैक्षिक निष्पत्ति में

कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट कि प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 5 के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं था ।

छात्रों एवं छात्राओं की गणित विषय में शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना

प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की गणित विषय में शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करने के लिए सम्बंधित प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी – मूल्य की गणना की गयी। इससे प्राप्त निष्कर्ष का विवरण तालिका – 2 प्रस्तुत है ।

तालिका – 2 रू भागलपुर जिलें में छात्रों एवं छात्राओं की गणित विषय के प्राप्ताकों के मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–मूल्य के मान

क्र.	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य
1.	छात्र	5.32	2.72	0.24	0.58
2.	छात्रायें	5.46	2.83		

तालिका – 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 के छात्रों एवं छात्राओं की गणित विषय के टी– मूल्य का मान (0.58) सार्थक नहीं है। अतः इसके आलोक में शून्य परिकल्पना ष्प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 के छात्रों एवं छात्राओं की गणित विषय की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैष् को स्वीकृत किया जाता है। अतएव यह स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 5 के छात्रों एवं छात्राओं की गणित विषय की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं था ।

छात्रों एवं छात्राओं की विज्ञान विषय में शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना

प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की विज्ञान विषय में शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करने के लिए सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी – मूल्य की गणना की गयी। इससे प्राप्त निष्कर्ष का विवरण तालिका –3 प्रस्तुत है ।

तालिका –3 रू भागलपुर जिलें में छात्रों एवं छात्राओं की विज्ञान विषय के प्राप्तांको के मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–मूल्य के मान

क्र.	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य
1.	छात्र	8.68	3.11	0.26	0.15
2.	छात्रायें	8.98	2.89		

तालिका –3 को देखने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 5 में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं के विज्ञान विषय के टी – मूल्य का मान (1.15) सार्थक नहीं है। इस आलोक में शून्य परिकल्पना प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 के छात्रों एवं छात्राओं की विज्ञान विषय की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है को स्वीकृत किया जाता है। अतएव यह स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 के छात्रों एवं छात्राओं की विज्ञान विषय की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं था ।

प्रस्तुत निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि भागलपुर जिलें के प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा पाँच के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा, गणित एवं विज्ञान विषय की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

9. निष्कर्ष

शिक्षा सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए नयी–नयी विचारधाराओं, आन्दोलनों तथा सामाजिक परिवर्तन को जन्म देती है। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है । प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य की पूर्ति हेतु भारत सरकार द्वारा समय–समय पर विभिन्न कार्यक्रम लागू किये गये। प्राथमिक शिक्षा संपूर्ण ढांचे का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह इस स्तर पर है कि बच्चा एक औपचारिक शैक्षणिक संस्थान में जाना शुरू करता है। वह जो शिक्षा प्राप्त करता है वह उसके शारीरिक, मानसिक, नैतिक, भावनात्मक, बौद्धिक और सामाजिक विकास की नींव प्रदान करता है। प्राथमिक शिक्षा माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा के लिए बहुत आवश्यक है। प्राथमिक शिक्षा न केवल सामाजिक न्याय और लोकतंत्र के आधार पर सर्वोच्च प्राथमिकता की हकदार है, बल्कि औसत कार्यकर्ता की क्षमता बढ़ाने और राष्ट्रीय उत्पादकता बढ़ाने के लिए भी है। संवैधानिक दायित्व होने के अलावा, व्यापक साक्षरता के प्रसार के लिए सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान महत्वपूर्ण है, जो आर्थिक विकास, सामाजिक संरचना के संशोधन और लोकतांत्रिक संस्थानों के प्रभावी कामकाज के लिए एक बुनियादी आवश्यकता है

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

संदर्भ

राज्य शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशिक्षण संस्थान (2012) ''अभिनव'' शैक्षिक प्रबन्धन पत्रिका, सीमैट, एलनगंज, इलाहाबाद।

बाल्मिकी महन्तो (2015)–प्रारंभिक शिक्षा की चुनौतियाँ, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा।

गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया (1986)– नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन 1986, प्राब्लम ऑफ एक्शन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली।

न्यूमैन, डब्ल्यू एल0 (2010)– सोशल रिसर्च मेथोडोलॉजी क्वालिटेटिव एण्ड क्वान्टिटेटिव एप्रोच, टोरोंटो सिडनी, एलिन एण्ड बेकन।

पाण्डेय रामसकल और मिश्र करूणा (2011)– भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

देसाई, डी0एस0 (2011)– कम्पलसरी प्राइमरी एजुकेशन ऑफ इण्डिया, द इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, बाम्बे।
मेहता अरूण सी0 (2014)– एनालिटिकल रिपोर्ट कार्ड्स, एलीमेन्ट्री एजुकेशन इन इण्डिया, नई दिल्ली, नीपा।
सिंह वीरेन्द्र एण्ड कुमार मनीष (2016)– चेजिंग प्रोफाइल ऑफ रूरल एलीमेन्ट्री एजुकेशन इन बेस्टर्न स्टेट ऑफ इण्डिया नेशनल जनरल ऑफ एजुकेशन, वाल्यूम ग ।
सारस्वत मालती एवं मदन मोहन (2010)– भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं, विद्या पब्लिकेशन, आगरा।
डा0 सक्सेना एस0सी0– प्रबन्ध के सिद्धान्त, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
डा0 दूबे नारायण सत्य– शिक्षा तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन, साहित्य प्रकाशन आगरा।
गुप्ता आर0 के0 एण्ड गुप्ता (2012)– आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के अन्तर्गत दी जाने वाली सामग्री के उपयोग का अध्ययन : एस0सी0इ0 आर0टी0 फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशन रिसर्च। बनर्जी रूक्मिनी (2010)– 'पार्वेटी एण्ड प्राइमरी स्कूलिंग।
कोठारी (2014)– चैलेंजेज ऑफ यूनिवर्सलाइजेशन ऑफ इलिमेन्ट्री एजुकेशन इन इण्डिया।
नेशनल यूनिर्सिटी ऑफ एजुकेशन प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन (2015–16)–'यूनिवर्सलाइजेशन इन इण्डिया डायस फ्लैश स्टैट्टिक्स 2015–16।
मेहता ए0 (2015)–भारत में सभी के लिए शिक्षा, अनामिका प्रकाशन, अशोक बिहार, दिल्ली।
भाटिया कमला– बेसिक स्कूल प्रबन्ध, यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स, जालन्धर अम्बाला छावनी।
कुमार हरीश (2015)– उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वशिक्षा अभियान के क्रियान्वयन का अध्ययन, शोध।
ऑल इण्डिया सैम्पल सर्वे टू इस्टीमेट द नम्बर ऑफ आउट ऑफ स्कूल चिल्ड्रेन इन द एज ग्रुप 6–13 (2015)
मोहन्ती शिवा शंकर (2012) – स्कूल कम्यूनिटी रिलेशनशिप पर अध्ययन, शोध।
नायक जे0पी0 तथा नुरूल्ला (2015)– भारतीय शिक्षा का इतिहास, मैकमिलन, नई दिल्ली।
नेपा आन्ध्र प्रदेश (2012)– शिक्षा के सार्वजनीकरण के तहत प्राथमिक शिक्षा प्रकाशन का अध्ययन।
नायक एस0पी0 (2015)– इक्वैलिटी, क्वान्टिटी एण्ड क्वालिटी इन एलुसिव ट्रैंगल इन इण्डियन एजुकेशन।
पाण्डेय पी0के0 व शर्मा आर0सी0 (2012)– पंचायती राज व्यवस्था के तहत प्राथमिक विद्यालयों के प्रबन्धन का अध्ययन– बुच एम0बी0 सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन नई दिल्ली।
पाण्डेय आर0एस0 (2015)– एजुकेशन एस्टरडे एण्ड टूडे; एक विश्लेषण, हॉरिजन पब्लिशर्स, इलाहाबाद।
आचार्य ए0ए0 (2014)– बारंगल जिले में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का अध्ययन शोध।
मोटगे एस0वी0 (2014)– मराठवाड़ा क्षेत्र पर एक अध्ययन शोध।